इस्लाम कबूल करने से पहले के गुनाह

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी 'रसूलुल्लाहﷺ के साथियो का हाल'.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

*बुखारी, रावी हज़रत अमर बिन अल-आस रदी. > जब अल्लाह ने मेरे दिल में इस्लाम लाने का जज़्बा पैदा किया तो में रसूलुल्लाहﷺ के पास हाज़िर हुवा, मेने कहा की आप अपना हाथ बढायें, में आपके हाथ पर बैअत करूंगा (इस बात का वादा करूंगा की अब मुझे एक अल्लाह की बन्दगी करनी है) जब आपﷺ ने अपना हाथ बढाया तो मेने अपना हाथ खींच लिया, आपने पूछा क्या हुवा? तुमने अपना हाथ खींच क्यू लिया? मेने कहा में एक शर्त लगाना चाहता हूं आपने पूछा वो क्या शर्त है? मेने कहा की वो शर्त ये है की मेरे पिछले गुनाह माफ हो जायें. आपने फरमाया ए अमर! क्या तुम नहीं जानते की इस्लाम उन तमाम गुनाहों को दोह देता है जो इस्लाम लाने

से पहले आदमी ने किये होते है. यहां समझने की बात ये है की कुरान और आपﷺ की तबलीग गैर मुस्लीम लोगों में इस ढंग पर होती थी की आदमी को अपनी निजात (मुकती) की फिकर हो जाती थी, और उसे इस बात का यकीन हो जाता था की उसके बाप दादा का मज़हब (धर्म) उसके काम नहीं आ सकता और ये की इस दुन्या के बाद एक और ज़िन्दगी आने वाली है, और वोही इस लायक है की उसके लिए आदमी फिकर करे.

छोटे गुनाह

*बुखारी, रावी हज़रत अनस रदी. > अपने जमाने के लोगों से फरमाते है की तुम लोग ऐसे बहुत से काम करते हो जो तुम्हारी निगाहों में बाल से ज़्यादा हल्के होते है (यानी हकीर होते है) लेकिन हम उन्हें रसूलुल्लाहﷺ के ज़माने में दीन व ईमान के लिए खतरनाक खयाल करते थे. आदमी छोटे-छोटे गुनाहों को हल्का समझने लगे तो उसका मतलब ये है की एक दिन ऐसा आएगा की वो बडे से बडा गुनाह करेगा और उसे हल्का जानेगा.